आलस्य और अलबेलापन - 44

अव्यक्त बापदादा :- (07.03.1993)

➳ _ ➳ बापदादा को भी बच्चों का मेहनत या मुश्किल अनुभव करना अच्छा नहीं लगता। **मास्टर सर्वशक्तिवान वा सर्वशक्तिवान के कम्बाइन्ड-रूप और फिर मुश्किल कैसे हो सकती।** जरूर कोई अलबेलापन वा आलस्य वा पुरानी पास्ट लाइफ के संस्कार इमर्ज होते हैं तब मुश्किल अनुभव होता है।

➳ _ ➳ जब मरजीवा बन गये तो पुराने संस्कार की भी मृत्यु हो गयी, पुराने संस्कार इमर्ज हो नहीं सकते। बिल्कुल भूल जाओ-ये पुराने जन्म के हैं, ब्राह्मण जन्म के नहीं हैं। **जब पुराना जन्म समाप्त हुआ, नया जन्म धारण किया तो नया जन्म, नये संस्कार।**

➳ _ ➳ सभी अपने को सहजयोगी अनुभव करते हो? जो सहज बात होती है वो सदा सहज होती है या कभी-कभी मुश्किल होती है? योग मुश्किल है या आप मुश्किल कर देते हो? तो मुश्किल क्यों करते हो? अच्छा लगता है मुश्किल?

➳ _ ➳ जब अपने में कोई न कोई कमजोरी लाते हो, तो मुश्किल हो जाता है। कमजोरी मुश्किल बनायेगी। तो कमजोरी आने क्यों देते हो? बच्चे किसके हो? आप अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान कहलाते हो या मास्टर कमजोर 2 मास्टर सर्वशक्तिवान! फिर कमजोर क्यों?

➳ _ ➳ अगर कमजोरी आ जाती है, चाहते नहीं हो लेकिन आ जाती है-तो आने-जाने का कारण क्या है? चेकिंग ठीक नहीं है। चलते-चलते कहाँ न कहाँ किसी बात में अलबेलापन आ जाता है, तब कमजोरी आ जाती है। **तो सदा अटेन्शन रखो कि कहाँ भी, कभी भी अलबेलापन नहीं हो।**

➳ _ ➳ अलबेलापन अनेक प्रकार से आता है। सबसे रॉयल रूप अलबेलेपन का है पुरुषार्थ कर रहे हैं, हो जायेगा, समय पर जरूर करके ही दिखायेंगे। पुरुषार्थ करते हैं लेकिन समय पर आधार रखते हैं, 'स्वयं' पर आधार नहीं रखते तो - अलबेले हो जाते हैं। तो आप कौन हो? अलबेले हो या तीव्र पुरुषार्थी?

➢➢ मेहनत या मुश्किल अनुभव करना

➳ _ ➳ आलस्य या अलबेलापन

➳ _ ➳ पुरानी पास्ट लाइफ के संस्कार इमर्ज होना

➢➢ मरजीवा - पुराने संस्कारों की मृत्यु

➳ _ ➳ पुराने संस्कार

→ दुख के संस्कार

→ विकार के संस्कार

→ उदासी के संस्कार

→ अशुद्धता के संस्कार

→ दुख देने दुख लेने के

➢➢ सम्पूर्ण वैष्णव - जो सूक्ष्म रूप से फरमान की पालना करे

➳ _ ➳ सूक्ष्म फरमान

→ निरंतर याद करना

→ मनसा वाचा कर्मणा पवित्रता

→ **ब्राह्मण जन्म के संस्कार - सम्पूर्ण पवित्रता**

➢➢ योग मे मुश्किल लगने का कारण है

➳ _ ➳ अपने मे कोई कमजोरी लाना

➳ _ ➳ कमजोरी के कारण

→ अपनी चेकिंग ठीक से न करना

→ **अटेंशन की कमी से अलवेलापन**

➢➢ मास्टर सर्वशक्तिमान

➳ _ ➳ **जिसमे अनन्त शक्तियां है**

➳ _ ➳ अनंत सम्भावनायें है

➳ _ ➳ सम्पूर्ण निर्भयता

➢➢ अलबेलेपन के रायल रूप

➳ _ ➳ ये तो होता ही रहता है

➳ _ ➳ कौन बना है सम्पूर्ण

➳ _ ➳ कर तो रहे है पुरूषार्थ

➳ _ ➳ कल करेगे

➳ _ ➳ हो जायेगा

➢➢ संकल्प करो -

➳ _ ➳ **मैं आत्मा मास्टर सर्वशक्तिमान हूं व शक्तियां आना चालू हो जायेगी**

➳ _ ➳ मुझ आत्मा मे अनंत शक्तियां समाई हुई है

➳ _ ➳ मै अति बलवान आत्मा हूं

➳ _ ➳ महावीर आत्मा हूं

➳ _ ➳ बलशाली आत्मा हूं

➳ _ ➳ ऐसा कुछ नही जो मै नही कर सकता

➳ _ ➳ **असम्भव शब्द ब्राह्मणों की डिक्शनरी मे नही**

➳ _ ➳ सब कुछ कर सकते हो

➳ _ ➳ अनन्त सम्भावनायें है

➳ _ ➳ ये सारी शक्तियां मुझ आत्मा मे है

➳ _ ➳ **केवल संकल्प से ही हर कार्य किया जा सकता है**

➳ _ ➳ जो संकल्प करेगे वैसा ही हमारा मन रिसपोंड करेगा

➳ _ ➳ जैसा संकल्प करते है वैसा ही होता है

→ मैं दुखी हूं दुखी हूं तो दुख आने लगेगा

→ मैं बहुत फील करता हूं तो हर बात फील होगी

→ मैं गरीब हूं मैं गरीब हूं और गरीबी आने लगेगी

➳ _ ➳ **जो जो संकल्प करते है वो घटना साकार मे घटित होने लगती है**

➳ _ ➳ ये सारा खेल है संकल्पों का

➢➢ संकल्पों की सिद्धि से

➳ _ ➳ **यहां बैठकर किसी भी आत्मा को जो संदेश देना है दे सकते हो**

➳ _ ➳ मन मे बीज डालो तो बीज पल्लवित होगा।

➳ _ ➳ यहीं बैठकर संकल्प दे दो हे देवकुल की महान आत्मा आ जाओ।

➳ _ ➳ बेतार सम्प्रेषण से संकल्पो से सेवा कर सकते हो

➢➢ सर्वशक्तिमान अर्थात

➳ _ ➳ **जो संकल्पो से ही सारे कार्य सिद्ध कर दे**

➳ _ ➳ केवल संकल्पों से। यहां बैठकर बस संकल्प करो

➳ _ ➳ ये आत्मा आ जाए

➳ _ ➳ ये आत्मा इसे करने लगे

➳ _ ➳ ये आत्मा भगवान को ढूंढने लगे

➳ _ ➳ भगवान की खोज इस आत्मा मे उभर आए

➳ _ ➳ वो आत्मा भगवान को ढूंढने लगेगी और पहुंच जायेगी

➳ _ ➳ विश्व की सब आत्मायें जो अब तक बाबा से नही मिली व उन आत्माओं का आवाहन किया

➳ _ ➳ वो सारी आत्मायें डायमंड हाल मे आ गई

→ वो सारी आत्मायें मुरली सुन रहे है।

→ बापदादा पहली बार आने वाले से मिलकर खुश हो रहे है।

→ उन आत्माओ को संकल्प दे रहे है परमात्म प्रेम मे मग्न हो जाओ।

➳ _ ➳ **संकल्पों की सिद्धि के लिए याद और पवित्रता उतनी परफेक्ट हो तभी संकल्प श्रेष्ठ होने लगते है**